ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। अथर्ववेद 2/6/5
हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! आप हमें सब पापाचरणों से दूर करें।
O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds

वर्ष 37, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 फरवरी, 2014 से रविवार 9 फरवरी, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से
नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला– 2014 के अवसर पर प्रगति मैदान में होगा

वृहद् स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

हजारों लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लक्ष्य

आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, सहयोगी संस्थानों तथा दानी महानुभावों से सहयोग की अपील

आर्यसमाज का साहित्य : विचारों की पूंजी – हजारों युवा पाठकों तक पहुंचाने का होगा प्रयास

आपको विदित ही है कि नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली की ओर से प्रति वर्ष नई दिल्ली के प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष

हिन्दी साहित्य
हॉल : 18 स्टाल : 119

यह मेला **15 से 23 फरवरी, 2014** तक आयोजित किया जा रहा है।

यह पुस्तक मेला वैदिक साहित्य प्रचार की दृष्टि से एक ऐसा मंच होता है जहां हर रोज ऐसे व्यक्ति जो आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक साहित्य से अनजान होता है या बहुत कम जानकारी रखते हैं। उस प्रत्येक व्यक्ति तक इन सबकी जानकारी पहुंचाना ही हमारा उद्देश्य होता है। इसी उद्देश्यपूर्ति हेतु सभा ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से पहली बार **एक स्टाल अंग्रेजी साहित्य तथा छह स्टाल हिन्दी साहित्य के लिए** बुक कराए गए हैं, जिसके लिए लगभग 3 लाख रुपये किराए के रूप में दिए गए है। इस अवसर पर कम से कम 25000 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये में पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जबकि सत्यार्थ प्रकाश का न्यूनतम मूल्य 50/- रुपये है। आर्ष सहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से 20/- प्रति पुस्तक का सहयोग दिया गया है। शेष 20/-रुपये का हम आपसे सहयोग चाहते हैं। **हमने देखा है कि इससे पहले के पुस्तक मेलों में कुरान और बाइबिल की लाखों प्रतियां उनके संगठनों द्वारा नि:शुल्क वितरित की जाती रही हैं, यह हम सबके लिए चिन्तन का विषय है।**

शनिवार, 15 फरवरी से रविवार, 23 फरवरी 2014 तक प्रतिदिन प्रात: 11 से रात्रि 8 बजे तक खुलेगा पुस्तक मेला

स्टाल उद्घाटन
शनिवार 15 फरवरी, 2014 प्रात: 11 बजे

सभा की कार्यकारणी बैठक में निर्णय लिया गया कि इस छूट (20/- रुपये प्रति) के लिए सहयोग की अपील की जाए। अत: निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में इस विषय की जानकारी देवें तथा अधिकाधिक सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रचार में सदस्यों को प्रेरणा एवं जानकारी प्रदान करें, जिससे मेले में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अल्प मूल्य पर सत्यार्थ प्रकाश तथा उसे पढ़ने की प्रेरणा दी जा सकें।

इसके अतिरिक्त '**आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र**' पत्रक भी नि:शुल्क वितरित किया जाएगा, जिसकी 5000 प्रतियां बनने पर 10000/- रुपये व्यय होगा, जिसके नीचे आपका/आपकी संस्था/आर्यसमाज का नाम लिखा होगा। नाम प्रकाशित कराने के लिए श्री विजय आर्य (9540040339) से सम्पर्क करें।

अत: आपसे निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज की ओर से कम से कम 100 प्रतियों की सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें। आप सत्यार्थ प्रकाश की जितनी प्रतियों का सहयोग देना चाहें उसे 20 से गुणा करके उसका भी सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। **यथा 100 सत्यार्थ प्रकाश× 20 = 2000/- रु., 200 प्रतियों के लिए 4000/- रु.**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान भारत सरकार के आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। अत: समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थानों, दानी सज्जनों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वे इस अवसर पर साहित्य प्रचार हेतु अधिकाधिक सहयोग राशि

अंग्रेजी साहित्य
हॉल नं. 10 स्टाल : 27

नकद/मनिआर्डर/चैक के माध्यम से 'सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भिजवाकर सहयोग प्रदान करें। कृपया चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम बनाएं। आप चाहें तो सभा के निम्न बैंक खाते में भी अपनी सहयोग राशि जमा करा सकते हैं-

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'
खाता सं. 910010009140900
एक्सिस बैक, IFSC - UTIB0000223
MICR - 110211025

कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य** जी को सूचित करके **aryasabha@yahoo.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि फेसबुक, एस.एम.एस., ईमेल तथा ट्वीटर आदि के माध्यम से अधिकाधिक लोगों की इसकी सूचना दें तथा स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

समयदानी कार्यकर्त्ता स्टाल पर अपनी सेवाएं देने हेतु संयोजक श्री सुखबीरसिंह आर्य (9350502175) पर नाम लिखवाएं

आर्यजन ईमेल, एस.एम.एस, फेस बुक, ट्वीटर आदि के माध्यम से स्टाल नं. की सूचना पहुंचाकर जन-साधारण को आमन्त्रित करने में सहयोगी बनें

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग जमा करें
'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900
एक्सिस बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

वेद-स्वाध्याय

चिकित्सक आरोग्य प्रदान करें

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका। उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु।। ऋग्वेद 10/106/6

अर्थ—*(सृण्या इव)* दरांती के समान ये दोनों कार्य चिकित्सक और शल्य चिकित्सक जिनमें एक *(जर्भरी)* पथ्य, परहेज, औषध द्वारा शरीर के बल को स्थिर रखता है और दूसरा *(तुर्फरीतू)* जब कोई रोगी हुआ अंग गल-सड़ जाये तब *(नैतोशेव)* तीक्ष्ण शस्त्र से उसकी शल्य-क्रिया करता है *(तुर्फरी पर्फरीका)* शस्त्रच्छेदन और घाव के रोपण में कुशल वैद्य, चिकित्सक *(उदन्यजेव)* समुद्र में उत्पन्न दो मोतियों की भाँति *(जेमना मदेरू)* रोगों पर विजय पाने से सबको हर्षित करने वाले *(ता मे)* वे दोनों मेरे *(जरायु)* वार्धक्य, बुढ़ापे के कारण *(मरायु)* मृतप्राय: शरीर को *(अजरम्)* जरा रहित कर दें।

शरीर-इन्द्रिय-मन और आत्मा के संयोग का नाम आयु है आयु की रक्षा का ज्ञान कराने वाले ग्रन्थ का नाम 'आयुर्वेद' है।

हिताहितं सुखं दु:खमायुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेद: स उच्यते॥

चरक०सू० १.४१

हितकर आयु, अहितकर आयु, सुखदायक आयु और दु:ख देने वाली आयु के लिये पथ्य-अपथ्य, आयु का मान और स्वरूप बताने वाले शास्त्र को आयुर्वेद कहते हैं। इसके आठ अंग हैं—१. काय चिकित्सा, २. बाल चिकित्सा=कौमार भृत्य, ३. ग्रह-भूत चिकित्सा [मानसिक रोगों की चिकित्सा], ४. ऊर्ध्वांग चिकित्सा = शालाक्य अर्थात् गले से ऊपर के अंगों की चिकित्सा, ५. शल्य चिकित्सा [सर्जरी], ६. विष चिकित्सा, ७. जरा चिकित्सा-रसायन, ८. वृषचिकित्सा=वाजीकरण। इनमें काय चिकित्सा उसे कहते हैं जहाँ आहार-विहार, पथ्य-परहेज और औषधियों द्वारा जठराग्नि को प्रदीप्त करना तथा रोगों का निवारण करने का उपाय बताया हो। जैसे चरक संहिता आदि में। शल्य चिकित्सा—जब कोई अंग इतना विकृत हो जाये कि अन्य अंगों को भी रोगी बना दे तब उसका उपाय उसे काटकर शरीर से पृथक् कर देना और शरीर में कोई शस्त्र या अन्य पदार्थ प्रविष्ट हो जाये उसे बाहर निकाल देना।

प्रस्तुत मन्त्र के देवता 'अश्विनौ' हैं। कुशल चिकित्सक का नाम अश्विन् है। ये दोनों काय चिकित्सक और शल्य चिकित्सक रोग से आक्रान्त व्यक्ति की चिकित्सा कर उसे आरोग्यवान् और जरा-रहित बनायें यह मन्त्र का अभिप्राय है।

सृणि=दात्री [दरांती] को कहते हैं। जैसे फसल पक जाने पर किसान लोग दरांती से गेहूँ, चना, चावल, ज्वार आदि को काटते हैं और कटी फसल को हाथों में धारण कर उसकी पूलियां बना उन्हें बांध देते हैं इसी प्रकार एक चिकित्सक रुग्ण व्यक्ति के शरीर पर शल्यक्रिया [आपरेशन] कर पीड़ित अंग को बाहर निकालने का कार्य करता है और दूसरा घाव से रक्त न बहे इसके लिये पट्टी बांधता और घाव को जलदी भरने का औषध देता है। इन दोनों का वर्णन मन्त्र में किया है—**सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरिका।**

जर्भरी पथ्य, परहेज, औषध द्वारा शरीर के रोगों को दूर करने वाला वैद्य और **तुर्फरीतू** शल्य चिकित्सक [सर्जन] कुशलता से गले सड़े अंग अथवा शरीर में प्रविष्ट हुये शल्य का आहरण करे और दूसरा काय चिकित्सक मरहम-पट्टी, घाव को शीघ्र भरने के लिये औषध प्रदान करे। ये दोनों कुशल चिकित्सक **उदन्यजेव जेमना मदेरू** समुद्र से प्राप्त दो मोतियों के समान सफल चिकित्सक और रोगी को स्वस्थ बना देने के कारण सबको हर्षित करने वाले हैं।

शल्य चिकित्सा जिन यन्त्रों, शस्त्रों और क्षारसूत्र, तुम्बी, शृंगी एवं जलौका [जौंक] द्वारा की जाती है उनकी विस्तृत सूची 'सुश्रुत' और 'अष्टांगहृदय' में दी गई है।

यन्त्र—नाना प्रकार के एवं नाना स्थानों को पीड़ित करने वाले शल्यों को बाहर निकालने का जो उपाय-साधन है, उसको यन्त्र कहते हैं और जो साधन रुग्ण अंग को देखने में उपयोगी है वह भी यन्त्र है। सब यन्त्रों में कंकमुख यन्त्र प्रधान है जो गहराई में, प्रविष्ट हो शल्य को पकड़ कर बाहर निकाल देता है।

शस्त्र—पीड़ित, गलित, अङ्ग का छेदन, भेदन, कर्तन, सीना, घर्षण आदि कार्यों के लिये योग्य कर्मार से नीली आभा वाले लोहे से बनवाये जाते हैं।

क्षार सूत्र—अर्श बवासीर और भगन्दर के लिये ओषधियों के लेप से बनाये गये सूत्र

तुम्बी, शृंगी—पीड़ित स्थान पर सञ्चित दूषित रक्त को निकालने के लिये

जलौका-जौंक, यह भी दूषित रक्त को निकालने में प्रयुक्त होती है। इसी भाँति सिरा वेध, मर्म स्थानों पर दागना आदि विविध चिकित्सा का वर्णन 'सुश्रुत' और 'अष्टांगहृदय' में दिया गया है।

काय चिकित्सा—इसमें रोग, रोगों के कारण, निदान, चिकित्सा द्रव्य गुण विज्ञान, रसायन, वाजीकरण आदि का समावेश है। चरक-संहिता, वाग्भट, माधव-निदान, शार्ङ्गधर-संहितादि में इस सम्बन्धी ज्ञान विस्तार से मिलता है।

शल्य चिकित्सक और काय चिकित्सक दोनों की ही उपयोगिता रोगों को दूर करने में है। जहाँ तक हो सके स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त अर्थात् उचित आहार-विहार और सामान्य ओषधियों द्वारा ही काय चिकित्सक को चिकित्सा करनी चाहिये। चिकित्सक का उद्देश्य सरलतम पद्धति से रोग को दूर करना है। जैसे यदि फोड़ा मरहम लगाने से ही फूट जाये तो उसके लिये चीरा लगाना और गोली खिलाना उचित नहीं है। मन्त्र में चिकित्सक को **मदेरू** अर्थात् हर्षित करने वाला कहा है। आजकल जो शल्य चिकित्सक भारी-भरकम शुल्क लेते हैं, उन्हें इस पर विचार करना चाहिये।

अन्तिम चरण में कहा है—**ता मे जराय्वजरं मरायु** वे दोनों प्रकार के चिकित्सक मेरे बुढ़ापे या रोग के कारण मृतप्राय: शरीर को, जरावस्था को हटा मु ो युवावस्था जैसा शक्ति-सामर्थ्य प्रदान करें। आयुर्वेदोक्त रसायन, कायाकल्प, कुटीप्रवेश आदि अनेक साधनों से वृद्धावस्था को पर्याप्त समय तक दूर रखा जा सकता है और दीर्घायु की प्राप्ति भी की जा सकती है। विस्तृत ज्ञान के लिये चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि को पढ़ना चाहिये। यहाँ मन्त्रानुसार थोड़ा ही परिचय दिया है।

- *क्रमश:*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक। पूरे सैट का मूल्य 400/-

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

बसन्त पंचमी एवं बलिदान दिवस पर विशेष

धर्म पर शहीद बालवीर हकीकत राय

आर्यावर्त ईश्वर भक्त, धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश-धर्म व मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद बाल हकीकत राय। हकीकत राय का बलिदान मुहम्मद शाह रंगीला के शासन काल में बसन्त पंचमी के दिन सन् 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएं बसन्त पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाती हैं।

हकीकत राय का जन्म सन् 1719 ई0 में सियालकोट पूर्व पंजाब (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। हकीकत राय के माता-पिता धार्मिक तथा ईश्वर भक्त थे इसलिए हकीकत राय भी धार्मिक वृत्ति का था।

हकीकत राय को सात वर्ष की आयु में ही सियालकोट के एक मदरसे में प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहब (अध्यापक) उसे बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकत राय से भारी ईष्या करते थे। एक दिन मौलवी साहब जरुरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकत राय को सौंप गए। मौलवी साहब के जाने पर मुसलमान बच्चों ने हुडदंग मचाना आरम्भ कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हें रोका तो उन्होंने उसे गालियां दी और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहब के आने पर हकीकत ने उन्हें सारा किस्सा सुनाया तो उन्होंने हकीकत राय को पुचकारकर अपनी छाती से लगा लिया और बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातिमा को गालियां देने और मौलवी साहब पर हकीकत राय की तरफदारी काने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से से दोनों की शिकायत कर दी। उन दिनों काजियों का बोलबाला था। काजी सुलेमान ने हकीकत राय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घोषणा कर दी कि अगर वह मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीर बेग को सौंप दिया। अमीर बेग ने काजी को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है, इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है, किन्तु काजी नहीं माना। अमीर बेग ने मामला लाहौर के नवाब सफेद खान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुंचे और नवाब से हकीकत राय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकतराय की सुन्दरता तथा कम उम्र देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा - 'हकीकत राय मेरी बात मान ले और मुसलमान बन जा, मैं अपनी सुन्दर बेटी का विवाह तेरे साथ कर दूंगा। अपनी सारी दौलत का तुझे मालिक बना दूंगा। नौकर-चाकर सब तेरे हुक्म बजाएंगे। यदि तू मेरी बात नहीं मानेगा तो पछताएगा।'

नवाब की बात सुनकर हकीकत राय ने गम्भीरता से पूछा - 'नवाब साहिब, आप मुझे पहले यह बता दो, यदि मैं मुसलमान बन जाऊं तो मैं कभी मरूंगा तो नहीं? उन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहेंगे?' नवाब ने सिर नीचा करके कहा - 'हकीकत राय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है। मैं भी मरूंगा, तू भी मरेगा और ये काजी मौलवी भी जरुर मरेंगे। बेटा मैं पुत्रहीन हूं अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जाएगा। जिन्दगी भर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकत अब तू ठीक तरह से सोच समझकर उत्तर दे बेटा।' हकीकतराय ने मुस्कराते हुए नवाब को जवाब दिया -

'यह सृष्टि का है नियम अटल,
जो इस दुनियां में आता है।
वह कर्मों का फल पाता है,
ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको,
मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोर नर्क में जाएगा,
जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम कृष्ण का वंशज हूं,
मैं वैदिक धर्म निभाऊंगा।
लालच के चक्कर में फंसकर,
इस्लाम नहीं अपनाऊंगा।।'

उत्तर सुनकर नवाब नाराज हो गया और रौब जमाते हुए बोला -

'तू कान खोलकर सुन लड़के,
मैं अब जल्लाद बुलाऊंगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा,
तेरे सिर को कटवाऊंगा।।
गुस्ताख बड़ा है तू लड़के,
मैंने तुझे पहचान लिया।
तू नर्मी के न लायक है,
यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मन बन ज्यादा,
ले बात मान सुख पाएगा।
छोटी सी उम्र में तू पगले,
वृथा ही मारा जाएगा।।

हकीकत राय ने नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला -

'तू अन्यायी सुन कान खोल,
क्यों ज्यादा बातें बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है,
तू किसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा, तन नश्वर है,
वेद शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव,
जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हूं पापी,
तू घोर नर्क में जाएगा।
इस दुनियां का हर नर-नारी,
अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन,
कभी न खाली जाएगा।
इस आर्यावर्त का हर मानव,
वीरों की गाथा गाएगा।।
धर्मवीर बलवानों की गाथा,
नर-नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी,
नफरत से देखे जाते हैं।।

- शेष पृष्ठ 6 पर

हकीकत राय ने गम्भीरता से पूछा - 'नवाब साहिब, आप मुझे पहले यह बता दो, यदि मैं मुसलमान बन जाऊं तो मैं कभी मरूंगा तो नहीं? उन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहेंगे?' नवाब ने सिर नीचा करके कहा - 'हकीकत राय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है। मैं भी मरूंगा, तू भी मरेगा और ये काजी मौलवी भी जरुर मरेंगे। बेटा मैं पुत्रहीन हूं अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जाएगा। जिन्दगी भर मौज उड़ाएगा।

..... हकीकत राय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया तथा तलवार हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा - 'अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूरा कर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर कोई मुसीबत न आ जाए।' जल्लाद ने अपने आंसुओं को पोंछकर तलवार उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढ़क गया।

जय हो वीर हकीकत राय

-विमलेश बंसल 'आर्या'

जय हो वीर हकीकत राय। सब जग तुमको शीश नवाय।। जय हो....

सत्रह सौ सोलह का दिन था, पुत्र पिता से पूर्ण अभिन्न था।
स्याल कोट भी देखकर सियाय।। जय हो....

वीर साहसी बालक न्यारा, व्रत पालक, बहु ज्ञानी प्यारा।
कोई न जग में उसके सिवाय।। जय हो....

मुहम्मद शाह का शासन काल था, असुरक्षित हिंदू का भाल था।
छोटी उम्र में कर दिया ब्याह।। जय हो....

पिता ने दाखिल किया मदरसा, सीखने अरबी, फारसी भाषा।
बड़ा हो अफसर नाम कमाए।। जय हो....

देख बुद्धि, कौशल, चतुराई, दया मौलवी ने बरसाई।
चिड़ गए सारे मुस्लिम भाई।। जय हो....

मारा पीटा और धमकाया, साजिश रचकर उसे फँसाया।
ले गए काजी पास लिवाय।। जय हो....

काजी बोला- इस्लाम धर्म को करो कबूल, या फिर जीवन जाना भूल।
जल्लाद से आरी दूँ चलवाय।। जय हो....

वीर बालक बोला- जीना मरना प्रभु की इच्छा, धर्म, पूर्वजों का ही अच्छा।
हँसकर दे दिया शीश चढ़ाय।। जय हो....

वसंत पंचमी का दिन प्यारा, अमर हुआ बलिदान तुम्हारा।
विमल यशस्वी गान सुनाय।। जय हो....

तेरह वर्ष की उम्र में जिसने किया बलिदान,
वीर बालक का करें जय जय जय गुणगान

- 329 द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-110065

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी के सहयोग से

सातवां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

युवापीढ़ी ने लिया दहेज न लेने न देने का संकल्प : 28 परिवारों ने रिश्तों की बातचीत की

युवक-युवतियों के विवाह के संबंध तय करने से पूर्व बल, बुद्धि तथा सौंदर्य के साथ परस्पर गुण, कर्म व स्वभाव को भी ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। इससे गृहस्थ जीवन सुखमय व आनन्दित रहेगा। उक्त विचार आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य वरिष्ठ उप प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने व्यक्त किए।

आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने जानकारी देते हुए बताया कि 2 फरवरी को सातवां परिचय सम्मेलन दिल्ली के विकासपुरी ब्लॉक डी आर्य समाज में आयोजित किया गया जिसका शुभारंभ अतिथियों श्री धर्मपाल आर्य, ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य, अर्जुनदेव चड्ढा, ओम प्रकाश घई, बलदेव सचदेवा, गोविंद लाल नागपाल, हरीश कालरा, जनक राज सेठी, अनिल ऑबेराय, अनिल भाटिया द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि आर्य परिवारों के रिश्ते आर्य परिवारों में ही हों इसके लिए जातिवाद को तोड़ना आवश्यक है जिससे उत्तम संतान का निर्माण हो सके। ऐसे आयोजन के लिए मैं श्री चड्ढा जी को बधाई देना चाहता हूं कि वे सफलता पूर्वक अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं।

अर्जुनदेव चड्ढा ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन व दिल्ली आर्य सभा के तत्वाधान में आयोजित यह सातवां आर्य परिवार परिचय सम्मेलन है। अब तक हुए छह सम्मेलनों में हमें अच्छी सफलता मिली है उसका उदाहरण है कि उक्त सम्मेलनों के माध्यमों से अब तक 350 से अधिक युवक युवतियों के रिश्ते सम्पन्न हुए हैं। हमारे पास दिल्ली से बाहर अन्य प्रन्तों, महानगरों से भी आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा उनके यहां आर्य युवक युवती परिचय सम्मेलन किए जाने का अनुरोध किया जा रहा है।

आर्यसमाज के पोर्टल www.thearyasamaj.org पर शीघ्र होगा आर्य विवाह सम्बन्ध की ऑनलाइन सेवा का शुभारम्भ: आर्यजन इस सेवा का लाभ उठाएं
– ब्र. राजसिंह आर्य

आर्य परिचय सम्मेलन के दिल्ली प्रांत के संयोजक गोविंद लाल नागपाल ने कहा कि हमारे युवक युवतियों के रिश्ते वैदिक विचारधारा वाले परिवारों में ही जिससे परिवारों में आपसी सामंजस्य बना रहेगा।

देश के अन्य शहरों में भी होने चाहिएं ऐसे सम्मेलन

कार्यक्रम की महिला संयोजिका श्रीमती विभा आर्या ने कहा कि इस सम्मेलन में उपस्थित युवक युवतियों व उनके अभिभावकों को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम जातिवाद से हटकर वैवाहिक रिश्ता तय करेंगे तथा दहेज न लेंगे न देंगे।

महिला संयोजिका श्रीमती वीना आर्या ने कहा कि इन सम्मेलनों के माध्यम से हमें आर्य विचारधारा के अनेकों परिवारों से जुडने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री यशपाल आर्य निगम पार्षद ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य परिवारों से जुड़े बच्चे अच्छे संस्कारों में पले-बड़े होते हैं। उनका संबंध जिस परिवार में होता है वहां वैदिक सुगंध फैलाते हैं।

आर्य समाज डी ब्लॉक विकासपुरी प्रधान श्री ओमप्रकाश घई एवं मंत्री श्री बलदेव सचदेवा ने कहा कि हमारा परम सौभाग्य है कि सातवां आर्य परिवार वैवाहिक सम्मेलन इस आर्य समाज में आयोजित किया जा रहा है। आशा है कि यहां जो भी युवक युवती व अभिभावक आये हैं वे रिश्ता बनाने में सफल होंगे। भविष्य में भी हमारी आर्य समाज में ऐसे आयोजन हों ऐसी कामना है।

महिला आर्य समाज की प्रधान श्रीमती उमा सोनी ने भी विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं व पदाधिकारियों की मीटिंग कर तैयारियों का जायजा लिया व आवश्यक दिशा निर्देश दिये। विनय आर्य ने कार्यकर्त्ताओं से कहा कि कार्यक्रम में भाग लेने वाले हमारे अतिथि हैं। अत: हम पूरी लगन, निष्ठा व आदर के साथ सभी का ध्यान रखकर कार्यक्रम को सफल बनावें।

राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि कार्यक्रम आयोजन स्थल पर

आर्य परिवारों में सम्बन्ध आज की आवश्यकता
– धर्मपाल आर्य

आगन्तुकों की सुविधा के लिए कई काउंटर जिसमें पूछताछ, रजिस्ट्रेशन, युवक-युवती तत्काल रजिस्ट्रेशन, युवक-युवती विवरणिका पुस्तक वितरण, बैज वितरण युवक युवती एवं अभिभावकों लगाये गए थे जिसकी जिम्मेदारी श्रीमती विभा आर्या की टीम, जिसमें श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती पुष्पा महावर, सुश्री हविषा आर्या, अशोक वैष्णवी, श्रीमती विनीता चावला, श्रीमती सुषमा खुराना बखूबी संभाल रही थी।

कार्यक्रम में विशेष रूप से सर्वश्री शिव कुमार मदान, सुखबीर सिंह आर्य, कंवरभान खैत्रपाल, हरीश कालरा,

– शेष पृष्ठ 7 पर

।। ओ३म्।।
गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी
महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी
प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राही रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में समरसीबल पम्प लगाने का कार्य आरम्भ

श्रीमती सुधा गुप्ता एवं श्री अशोक कुमार गुप्ता जी का सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी द्वारा देहरादून में संचालित कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के पुनरुद्धार की दिशा में कार्य आरम्भ हो गया है। गत दिनों गौशाला निर्माण की आधारशिला रखी गई थी। गुरुकुल में पानी की जरुरत तथा निर्माण कार्य में अत्यधिक आवश्यकता के होने के कारण आठ बोर के समरसीबल पम्प लगाने का कार्य आरम्भ हो गया हे। इस कार्य पर लगभग छह-साढ़े छह लाख रुपये का व्यय होगा।

श्रीमती सुधा गुप्ता एवं श्री अशोक कुमार गुप्ता द्वारा प्रदत्त दान राशि से यह कार्य आरम्भ हुआ। दिनांक 3 फरवरी को सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी के साथ देहरादून पहुंचे श्री गुप्ता ने राशि का चैक गुरुकुल की प्रबन्धक श्रीमती सविता आनन्द को प्रदान किया। इस अवसर पर यज्ञ का भी आयोजन किया गया, जिसमें श्री गुप्ता सपत्नीक यजमान बनें। दिल्ली के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री विद्यामित्र ठकराल, श्री आशीष आर्य एवं सहायक अधिष्ठाता श्री जयपकाश विद्यालंकार जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

दिल्ली सभा के अधिकारियों का पारिवारिक मिलन समारोह (पिकनिक) सम्पन्न

26 जनवरी को आयोजित इस पिकनिक में अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं पारिवारिक जनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया

समाजसेवा का कार्य करके करें - आर्य समाज का प्रचार-प्रसार

सेवा-कार्य सबसे कठिन कार्य होता है। कहते हैं-बिना सेवा के मेवा नहीं मिलती। करो सेवा पाओ मेवा।

महर्षि मनु ने भी कहा है -

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोप सेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

अर्थात् सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है- सेवा काम कठिन जग जाना। अर्थात् सेवा बहुत कठिन कार्य होता हैं। अत: सेवा का बड़ा महत्व है। सेवा करके हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

सेवा का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। यथा- देशसेवा, समाजसेवा, गौसेवा, गुरुसेवा, माता-पिता की सेवा, बच्चे की सेवा, पति सेवा, असहाय सेवा आदि। इन सेवाओं में समाजसेवा का प्रमुख स्थान है। सेवा करने से दूसरों के उपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके द्वारा उनके हृदय पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

समाजसेवा क्या है, समाजसेवा है- गरीबों की सहायता करना, बेसहारों को सहारा देना, जरूरतमंद की आर्थिक मदद करना, वस्त्रहीन को वस्त्र प्रदान करना, नि:शुल्क दवा का वितरण करना, निर्धन विद्यार्थियों को विद्यालयी गणवेश व पाठ्यसामग्री का वितरण करना, जहां अभाव हो उस अभाव को यथाशक्ति मिटाने का प्रयत्न करना आदि। इन कठिन कार्यों में से हम किसी भी कार्य को करके आर्य समाज के नाम को रोशन कर सकते हैं। ऐसी बहुत सी संस्थाएं हैं जो इन कार्यों को कर रही हैं तो हम भी क्यों न इन कार्यों को करके आर्य समाज का नाम गली-मुहल्ले, गांव-गांव में पहुंचा दें। इन कार्यों को करने से तत्स्थानों में आर्य समाज का नाम गली-मुहल्ले, गांव-गांव में पहुंचा दें। इन कार्यों को करने से तत्स्थानों में आर्य समाज की मुहर लग जाए, फिर वहां शनै: शनै: वैदिक ज्ञान का भी संदेश दे सकते हैं। पहले अपनी पहचान बनानी होगी। बिना अपनी पहचान बनाए समाज में अपनी छाप नहीं छोड़ सकते। सेवाकार्य लोगों के हृदय में महत्वपूर्ण स्थान बना लेता है। इसके द्वारा दिल पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और सच्चे मानव की श्रेणी में आ सकते हैं।

मैंने ऐसे तमाम सेवा के कार्य किए हैं, जैसे सड़क पर ठिठुरते लोगों को मैंने कम्बल व रजाई ओढ़ाकर आर्य समाज का परिचय दिया है। निर्धन विद्यार्थियों को पाठ्यसामग्री, विद्यालय गणवेश, बैग बांटकर आर्य समाज का नाम रोशन किया है। जिन लोगों के बीच कोई नहीं जाता, ऐसे गाड़िया लुहारों के परिवारों के बीच यज्ञ कार्य सम्पन्न करके आर्य समाज का संदे ा दिया है। प्यासे लोगों को शर्बत व जल पिलाकर एक सुखद अनुभूति की है। अनाथाश्रमों में बच्चों को उनकी जरूरत की चीजें पहुंचाई हैं। नए-पुराने कपड़े इकट्ठा करके निर्धन परिवारों के मध्य जाकर सेवाकार्य किया है। पक्षियों के लिए परिंडे बांधे हैं। जेल में बंद कैदियों को भी सहायता सामग्री पहुंचाई है। नशे में लत में धुत्ते रहने वाले नशेड़ियों के बीच जाकर सेवा के माध्यम से नशे की हानियों को बतलाया है। निर्धन परिवारों के लड़के-लड़कियों के विवाह में उपहार व आर्थिक मदद करके उनके हृदय में आर्य समाज के प्रति निष्ठा उत्पन्न की है। ऐसे अनेक कार्य मैंने किए हैं, जो सेवा से संबंधित हैं। इन समस्त कार्यों से लोगों ने आर्य समाज को जाना है और पहचाना है। ऐसे कार्यों से आर्य समाज के प्रति लोगों में जो भ्रांति है वह स्वत: समाप्त हो जाती है। इन कार्यों से प्रथम हम अपनी पहचान बना लें, तत्पश्चात अपना वैदिक संदेश प्रदान करने से उनके मन में स्थायी प्रभाव पड़ जाता है।

उस समय की याद आती है जब विद्यालयों में जाने पर आर्य समाज का नाम सुनते ही लोग नाक-भौं सिकोड़ते थे, बिदकते थे, बात भी सुनने को राजी नहीं थे, किन्तु जब उनके मध्य मैं निर्धन बच्चों की मदद के लिए सामग्री लेकर गया तो उन्होंने सादर बैठाया। इस कार्य के पश्चात शनै: शनै: विद्यालय में आर्य समाज ने अपना स्थान बना लिया। उनके मन से आर्य समाज के प्रति जो भ्रान्त धारणा थी, वह मिट गई।

गुजरात के भुज में जब भूकम्प आया था उस समय आर्य समाज संस्था की ओर से एक ट्रक हवन सामग्री और घी गया था ताकि हवन के माध्यम से पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। इस कार्य से आर्य समाज की बड़ी अच्छी छवि बनी। यह भी समाजसेवा का कार्य है जो पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा हुआ है। ऐसी प्रत्येक प्राकृतिक आपदाओं में आर्यसमाज का योगदान होना चाहिए।

सेवा का सीधा संबंध हृदय से है। जो कार्य हृदय से जुड़ जाता है वह अमिट हो जाता है। भूखे को पहले भोजन चाहिए ज्ञान नहीं। प्यासे को पहले पानी चाहिए, ध्यान नहीं। रोग पीड़ित को पहले दवा चाहिए, उपदे ा नहीं। बेघर-बार को पहले घर चाहिए, संदेश नहीं। असहाय को पहले सहायता चाहिए, आदर्शवादी बातें नहीं। ठिठुरते को पहले वस्त्र चाहिए, लच्छेदार भाषण नहीं। यदि हम इन कार्यों से अपने को जोड़ लें तो अपना वैदिक संदेश आसानी से जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। किया गया कार्य स्वयं में बहुत बड़ा उपदे ा है। आचरण की भाषा मौन होती है। सदाचारी का हर क्रियाकलाप पल-पल मौन उपदेश देता है।

एक बार सेवाकार्य से जुड़ करके तो देखिए, स्वत: इस कार्य को महत्व देना प्रारंभ कर देंगे। अपने साथ आर्य समाज का बैनर जरूर रखें। आर्य समाज के झंडे के नीचे कार्य करें। इससे आर्य समाज की पहचान बनेगी और लोगों के मध्य अच्छी छवि उभरेगी। आर्य समाज पहुंचा दलितों की बस्ती में - इस शीर्षक से छपा समाचार लोगों को खूब पसंद आया। मुझे भी दलित बस्तियों में जाकर एक नई अनुभूति हुई। निर्धन लोगों के जीवन स्तर को नजदीक से देखने समझने का मौका मिला। सेवा के अनेक क्षेत्र हैं- एकबार अस्पताल में रोगियों का हालचाल तो पूछने जाइए, विद्यालय में जाकर गरीब बच्चों के मासूम चेहरे तो देख आइए, मजदूरों की बस्तियों में नंगे पांव घूमते नन्हे-मुन्ने बच्चों को निहारिए, ठंड में ठिठुरते और गर्मी में तपते मजदूरों का निरीक्षण कीजिए। उस घर को तलाश लीजिए जिसमें अभावों में पली-बढ़ी कन्या का विवाह होने वाला है। किसी रात में किसी गांव का दृश्य देख आइए। एक से एक सेवा के अवसर मिलेंगे। आर्य समाज का नाम जन-जन पहुंचा सकेंगे।

सेवा के द्वारा उठी हुई सूक्ष्म तरंगे आपके जीवन को सुखद अनुभूतियों से अभिभूत कर देंगी। आप सच्चे अर्थों में मानव कहलाने के अधिकारी होंगे। मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां सार्थक हो जाएंगी। वही है मनुष्य जो मनुष्य के लिए मरे। जीवन में सुख-दुख का सम्मिश्रण करें। यदि आपके पास समृद्धि है तो उससे अपने जरूरतमंद लोगों को जरूर सहायता पहुंचाइए। उनके दुखों को दूर करने का प्रयत्न कीजिए। धनी धन के द्वारा, बली बल के द्वारा, ज्ञानी ज्ञान के द्वारा, चिन्तक चिन्तन के द्वारा, विचारक विचार के द्वारा, नाना प्रकार से सेवा की जा सकती है।

कोटा क्षेत्र में मैंने अनेक सेवाकार्य किए हैं। इनसे आर्य समाज का नाम रोशन हुआ है। आप भी अपने क्षेत्र में इस प्रकार के कार्य करके आर्य समाज की पहचान बना सकते हैं। यदि कुछ भी नहीं कर सकते तो घी और हवन-सामग्री लेकर निर्धन लोगों के मध्य जाकर हवन ही करें। इससे भी अच्छी छवि बनेगी। यह कार्य कठिन अवश्य है किन्तु यह बड़ा प्रभावशाली तरीका है। सेवाकार्य के द्वारा इसाई, लोगों के बीच जाने में जरा भी नहीं हिचकते। उनकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ते। हम भी इस दिशा में कदम बढाएं।

सेवा से लोगों को सुख मिलता है। सुख कौन नहीं चाहता। सेवा से मनुष्य क्या पशु-पक्षी, वृक्ष-वनस्पति भी आनन्द की अनुभूति करते हैं। आर्य समाज में जीवित पितरों का श्राद्ध और तर्पण सेवा से ही संबंधित है। जीवित पितरों को सेवा के द्वारा ही संतुष्ट किया जा सकता है। आज इस कार्य से लोग विमुख होते दिखाई दे रहे हैं। इसी कारण वृद्धाश्रमों की मांग बढ़ रही है। पितरों की विदाई के अवसर पर विशेष पक्ष का चयन कर लिया गया था जिसे आज रूढि की रस्सी से जकड़कर श्राद्ध पक्ष का गलत अर्थ लगाकर पाखण्ड फैलाया जा रहा है। जीवित की सेवा तो कर नहीं सकते, मरे प चात उसकी सेवा की जाती है। यह कहां तक उचित है। आर्य समाज सामूहिक रूप से सेवाकार्य को महत्व दे। कथनी नहीं अपितु करनी से दिखाए।

आइए, हम छोटे-छोटे सेवाकार्यों से जुड़कर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। इसमें कोई विद्वता और बहुत स्वाध्याय की भी जरूरत नहीं है, हां श्रद्धाभाव होना आवश्यक है। इस कार्य को प्रारंभ करके इसकी उपलब्धि का अंदाजा स्वयं लगा सकेंगे। व्यर्थ के वाद-विवाद में न पड़कर हम अपना समय और उर्जा सेवाकार्यों में लगाएं और आर्य समाज का प्रचार करें। एक निवेदन के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूं - हम आर्य समाज के लोग एक दूसरे के विरोध में व्यर्थ का समय न नष्ट करें। टांग खिंचाई न करें, निन्दा न करें। न ही परस्पर लड़ें-झगड़ें। इन सारी फाक्तियों को सेवाकार्यों में लगाएं। अपना-अपना क्षेत्र चुन लें। जो जिस क्षेत्र में जाना चाहे, जाये। केवल उपदेश नहीं अपितु करें दिखाएं। आज इसी की आवश्यकता है। हम चार दीवारी से बाहर आकर विस्तृत क्षेत्र में अपना कार्य करें। प्रतिष्ठा व सम्मान अपने आप मिलेगा।

- अर्जुन देव चड्ढा, प्रधान
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा
4-प-28, विज्ञाननगर,
कोटा (राज.)मो. 094141.87428

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभ्रंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-		
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

आर्यसमाज विकास नगर उत्तम नगर, नई दिल्ली का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गोविन्दपुरी में मकर संक्रान्ति उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गोविन्दपुरी नई दिल्ली में दिनांक 1 जनवरी को मकर संक्रान्ति उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर दोपहर 2:30 बजे यज्ञ हुआ, जिसमें यजमान बच्चों को बनाया गया। इस अवसर पर विचार टीवी द्वारा निर्मित नैतिक शिक्षा पर आधारित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

दिनांक 5 जनवरी को प्रात: 10 बजे फैंसी ड्रैस - देश के सेनानी तथा 11 बजे से वैदिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेने वाले समस्त प्रतिभागी बच्चों को पुस्कार भी दिए गए। - ***सरोज मदान, प्रचार मन्त्री***

पृष्ठ 5 का शेष

जनकराज सेठी, ज्योती ओबेराय, अनिल भाटिया आदि उपस्थित थे।

सम्मेलन में युवक व युवतियों ने मंच पर आकर अपना परिचय दिया तथा यह बताया कि उनको कैसा जीवन साथी चाहिए।

युवक -युवतियों के अभिभावकों ने भी मंच पर आकर अपने बच्चों का परिचय दिया। कार्यक्रम के दौरान ही परिवारों को आपस में मिलाने के लिए एक मेल मिलाप समिति श्री ओम प्रकाश घई के संयोजन में बनाई गई थी जिसमें शिव कुमार मदान, कंवरभान खैत्रपाल, बल्देव सचदेवा, हरीश कालरा ने रिश्तों की आपसी बातचीत को आगे बढ़ाया, जिससे उपस्थित युवक-युवतियों के 28 परिजनों ने रिश्ते की बातचीत की।

आर्य समाज के मुख्य कार्यकारी प्रधान हरीश कालरा ने बताया कि सम्मेलन में भाग लेने वालों के लिए आवास, नाश्ता तथा दिन के भोजन की व्यवस्था आर्य समाज विकासपुरी ब्लॉक डी द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करवाई गयी थी।

कार्यक्रम के अंत में प्रधान ओम प्रकाश घई, मंत्री बलदेव सचदेवा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सेवाभावी महानुभाव आगे आएं

कन्या गुरुकुल देहरादून, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के आश्रमों जो देश के विभिन्न भागों में चल रहे हैं एवं ऐसी ही अन्य संस्थाओं की सेवा करने के इच्छुक महानुभाव आगे आएं। सक्षम वानप्रस्थियों एवं ब्रह्मचारियों से निवेदन है कि इस कार्य के लिए इच्छुक होने पर केवल पत्र अथवा ईमेल द्वारा सूचित करें।

- ***विनय आर्य, महामन्त्री, vinayaryaji@yahoo.com***

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का वार्षिकोत्सव समारोह

11-12-13 अप्रैल, 2014

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वार्षिकोत्सव हेतु बस याया आयोजित की जाएगी। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपना कोई कार्यक्रम इन तिथियों में न रखें जिससे आप भी इस समारोह में भाग ले सकें।

- ***विनय आर्य, महामन्त्री***

पृष्ठ 3 का शेष

हकीकत राय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकत राय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया तथा तलवार हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा -

'अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूरा कर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर कोई मुसीबत न आ जाए।' जल्लाद ने अपने आंसुओं को पोंछकर तलवार उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढ़क गया।

धन्य था वह धर्म शहीद बाल हकीकत राय जिसने अपना सिर कटवाकर भारत माता का मस्तक संसार में ऊँचा कर दिया। जब तक सूरज-चांद, तारे एवं पृथ्वी रहेगी तब तक संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों! कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकत राय का बलिदान मुगल बादशाह शाहजहां के शासन काल में हुआ था तथा शाहजहां ने न्याय करते हुए उस नवाब तथा मौलवी और काजियों को मृत्यु दण्ड दिया था। किन्तु यह कथन सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है। शाहजहां के पुत्रा औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 में हुई थी तथा हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 में हुआ था, फिर उस समय शाहजहां कहां से आ गया? वास्तव में यह मुसलमानों की चाल थी।

आज भारत को वीर शहीद हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त धर्मात्मा, देशभक्त युवक-युवतियों की आवश्यकता है। अन्त में परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है -

हे भगवान दया के सागर,
भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत मां की गोद दयामय,
वीर सपूतों से अब भर दो।।
वीर हकीकत राय सरीखे,
भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी,
आन-बान के हो जो सच्चे।।
जिससे ऋषियों का यह भारत,
सारे जग का गुरु कहलाए।
भूखा नंगा आर्यवर्त में,
कोई कहीं नजर न आए।।

- ***ग्रा.पो.- बहीन, तह-हथीन जिला-फरीदाबाद (हरियाणा)***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. **प्रबन्धक (लीगल):** जो सभा के सम्पत्ति एवं कोर्ट सम्बन्धी कार्यों को कर सके।
2. **उपदेशक/प्रचारक/भजनोपदेशक :** जो सभा के वेद प्रचार विभाग/प्रचार वाहन पर कार्य कर सकें।
3. **सेल्समैन:** जो विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक साहित्य के आर्डर ला सके/विक्रय कर सके तथा पुस्तक मेलों में भी जाकर साहित्य प्रचार कार्य को सम्पन्न कर सके।
4. **हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक :** जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें।
5. **एकाउंटेंट :** पूर्ण अनुभवी हों।
6. **ड्राइवर :** कमर्शियल लाइसेंस एवं बैज वालों को वरियता।
7. **ग्राफिक डिजाइनर :** हिन्दी एवं अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य।

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

आवश्यकता है

निराश्रित बालिकाओं की संस्था के लिए गुरुकुल पद्धति वाली महिला संरक्षिका की आवश्यकता है। उम्र 40 से 55 वर्ष के बीच। नशे से मुक्त, शाकाहारी व संस्था के भवन में रहना अनिवार्य। भोजन व निवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार। जिनकी सेवा कार्य में रुचि हो वो 22.02.2014 तक आवेदन भेजें-

सचिव,
छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर,
4844/24, दरियागंज, नई दिल्ली-2

आवश्यकता है

आर्य समाज के नियमों कें अनुसार संचालित निराश्रित बालक-बालिकाओं की संस्था के लिए गुरुकुल पद्धति वाले पुरुष संरक्षक की आवश्यकता है। उम्र 40 से 55 वर्ष के बीच । नशे से मुक्त, शाकाहारी व संस्था के भवन में रहना अनिवार्य । भोजन व निवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार। जिनकी सेवा कार्य में रुचि हो वो 22.02.2014 तक आवेदन भेजें - ***सचिव, आर्य बाल गृह, 4844/24, दरिया गंज, नई दिल्ली-2***

भूल सुधार : आर्य सन्देश के अंक 13 से 19 जनवरी, 2014 में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित शोक समाचार श्रीमती बृजलता अग्रवाल का निधन एवं महाशय धर्मपाल जी के दामाद का निधन में भूलवश मृत्यु की तिथि का वर्ष 2013 प्रकाशित हो गया। कृपय इसे सुधारकर 2014 पढ़ा जाए। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 3 फरवरी, 2014 से रविवार 9 फरवरी, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6/7 फरवरी, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 फरवरी, 2014

प्रतिष्ठा में,

कृपया इस कार्यक्रम का उन्हें निमन्त्रण अवश्य दें अथवा उनका नाम-पता सभा को सूचित करें जिससे सभा उनको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर सके। आप उनके नाम एवं पते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

सभी आयोजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

निवेदक

ब्र० राजसिंह आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	अनिल तनेजा
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
9350077858	9810061763	9958174441	9873558465

उप प्रधान : ओम प्रकाश आर्य एवं शिवकुमार मदान।

मन्त्री : अरुण प्रकाश वर्मा, शिव शंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुरेश चन्द्र गुप्ता, सुखबीर सिंह आर्य,एवं जितेन्द्र भाटिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.), 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001

Telephone : 011-23360150, 23365959, IVR - 011-23488888

E-mail : aryasabha@yahoo.com • website www. thearyasamaj.org

निराश्रित कन्याओं के लिए सुयोग्य वरों की आवश्यकता

निराश्रित बालिकाओं के गृह में रह रही सुयोग्य, सुन्दर, शिक्षित, कन्याओं के लिए योग्य वरों की आवश्यकता है। इच्छुक युवक अपना पूर्ण विवरण आवेदन पत्र के साथ **22 फरवरी, 2014** तक निम्न पते पर भेजें–

सचिव,
चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट
4844/24 दरियागंज,
नई दिल्ली - 110002

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

– सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर